

नृकनति कृधन गि मू ल वामखश ग कपा लन ॥ ॥ श्री सर्वप्रार्थना वाक्ये
 उक्तं वै नाना ॥ ॥ मानयिष्ये वापि यापि प्रमाया सं ह गुरु भवता ल
 लिनार ॥ ॥ पा मंत्र कर्म उद्गाद म स थ धनिया उ न न नि प्रमा ला २ वि
 भ कलि म नृ उ वी ड क टा शत व्या पु व म म ष ड् म डा ॥ ॥ आ लो र प्र
 त्या र न स चा प यि न भव न काल ना ति दि न म डा मो स ह नि न स्म हित क न

कामय य उ म्ख भति वि क ना न ॥ ॥ दृ गी स वी न वि न ग्य न ना य क
 ठि नि च क म हा बी न की गा २ क र स स ना ग वी न भव न त र्ज यि स य न र्हा सा न ॥
 ॥ २० ॥ ना ग जन वर्हा ॥ ताल अ न मा थ ॥ दि पु ज दि म्ख त्रि नि न य ना
 २ म कू ट क म दि गी व ना ॥ ॥ ते ना ता ३ ॥ ॥ वाम क गी ट क २ द हि न क
 न ति २ स उ आ स न र वि ह वि ना ॥ ॥ सूर्य मी उ ल मा म ना ३ व म

वि ५५

वि ५५

इति रत्नमित्रमालासूत्रम् ॥ ॥ सतगुरुचरणरमित्रगतधनियार
नित्यवर्तिरत्नमित्रमिव द्वावातादिभानाविता ॥ ॥ नागमालवतास
मथ ॥ ॥ यजिनिधालिवतालिर्वजालिनिर्हिषिनिद्याप्रिनिर्द्वक
उलादिनि ॥ नमिः ग्राणाग्नवन्तमन्त्रा ॥ ॥ प्रिनिननुदवी
प्रिनुवनप्रवि ॥ ॥ पूर्वउरुनपव्विमदक्रिषदिगदवीरणदिनि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दिपिनिचउसिक्काजनी ॥ ॥ चतुत्रदिगतुक्कः सनंतुक्कावी २
 छिनित्रीनिदवीनाचतुदवी ॥ ॥ हरिहरवक्कः इन्द्रहरगल २ धा
 उक्कागिति सुमनसंतीव ॥ ३२ ॥ गगमासव ॥ तालमाथ ॥ उक्कददन
 नल्लमकट आसीकनारचतुर्तुक्कखप्पल्लकन धनधनी ॥ ॥ नमा
 मिश्रीमहोपद्वनध्वगा ॥ ॥ सयनआसापतिपूत्रितधनि

प्रवर्तितगाली ५

५५५५

दहिनश्रीगणपति. वामश्रीमहाकाल. सगलमंडलमा. प्रहसितस्थिता
॥ ॥ सुखि हंसा नगया. विष्णुवादिता २ भूत मवदुवा विदूत्रिन
हनम ॥ ॥ वज्रधनप्रसादिन. दाह हनयिषा २ गुरुवतनमो
लि. सिद्धि वनदाता ॥ २२ ॥ नागमाहव ॥ ता लमाथ ॥ ॥ पूर्व
दिगदिस्थित हंसासनिदवी २ वंदुबदनिदवी. धमि
धमि नगिगुली ॥ ॥ नमामिगु हंतिवसुधामात्रि

कागधपतिकुमाना ॥ ॥ अफ हंतिव अकथागिनि. आलिगल
॥ ॥ लाकावदनिमहितमयूनासनीदवी २ विंदुपाप्रधमि. वं
पुयिदवी ॥ ॥ कदन धानरूपा. वागाहिदवी २ कुकुमवदनी. वं
यनिदवि ॥ ॥ कनखधमि न. कं कालमरति २ प्रलमामिदवि.
श्री. महा लमिसगल ॥ ॥ ३४ नागवर्तललित ॥ तालरुजमा
न ॥ अफदलसनीजउहवप्रकाशित २ श्री. धमि न. वनधमन

वर्तितगाली ५
५५५५
तहायने

विनये जात

हृदय वंशः पत्रमाधव वंशः उषा वंशः सुहृत् वंशः ॥ ॥ अक्षर
यह नलः अक्षर वंशः हृदय वंशः उषा वंशः सुहृत् वंशः ॥ ॥
सतत वंशः सतत वंशः हृदय वंशः अक्षर वंशः यमार्तक
गातं ॥ २६ ॥ नागकदम्ब ॥ गालपट्टकं काल ॥ नीलकण्ठकान् प्रक

नयनं ॥ २६ ॥

सुनश्चर ॥ २६ ॥

लिन किनल २३ उर्ध्वगल कंठः अक्षर वंशः नाया ॥ ॥ नीलवर्णद्वीक
तिकपाला २३ गगनमा कक्षातिः अक्षर वंशः नाया ॥ ॥ अक्षर वंशः
अक्षर वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः ॥ ॥ अक्षर वंशः
अक्षर वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः ॥ ॥ अक्षर वंशः
अक्षर वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः ॥ ॥ अक्षर वंशः
अक्षर वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः ॥ ॥ अक्षर वंशः

५॥३६५

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५१॥

मालाश्रीलिङ्गः कायः किनवता ॥ ४॥ सनपालिनमहावीना ॥ ५॥ दंडुव
 नालः लालजिका धृष्टिउवकं ॥ २५॥ गभा एनं वं हविर्दहा
 शीषास्यापितरुर्जकता ॥ ५॥ श्री देवमहाकालः प्रिहवन्यापितः द
 वा श्री देवमहाकालः प्रिहवन्यापितः द
 वनहाकमलवदिता ॥ ५॥ ५१ ॥ गजधना ॥ नकताल ॥

रम्यमामाधिपति
 केसदप्रममामाधिपति
 लोके

गजधना

गजधना नयनतां उवमूर्तिः नृपाधिपतिगजधना
 रद्वनमहिमकृताः तत्र हतः तत्र निमित्तं तत्र स का ॥ ५॥
 मात्रियाविघ्नः मात्रियादप्यः मात्रियादः स्वविद्वत्तता ॥ २॥ मात्रि
 या मायाः मात्रिग्रासाः मन्वपमदः स्वनासिता ॥ ॥ पत्र
 वाली कुरुवज्रहस्तः हिंदीपालदहिनकता ॥ २॥ गजधना
 दागधना कपालहलकवः वास ॥ ॥ विविद्रवस्तुवदिति ॥

लोके
 रम्यमामाधिपति
 केसदप्रममामाधिपति
 लोके

विं

ऊदा जतममि मठिता २ लं व क न ~~न~~ लं वी द न ल म ह पा यं ल
रिमि रि मि वा ऊ न ॥ ॥ त्वा त न ध त न त्वा ग लि त म् प्र वि क म् प्र व
अ ति सू द न २ दि ना द क्ता त्व म् प्र स र्वा तः न म् प्रो क्त २ गु ग म् प्र ता
ग ग त ल अ न द र्ज म् प्रान ॥ ॥ विं म् प्र स र्वा र ह वि धु वां २ म् प्रो क्त
त्र विं या चिं न सुं सुं तुं वां २ नं म् प्रो मि २ वं ग म् प्र त सुं सुं लं वा २ सुं य नं
म नि हं द यां ॥ ॥ विं म् प्र स र्वा यिं क्ता म् प्र स र्वा ह न सुं य नं ति नं हं द यां

विं म् प्र स र्वा यिं क्ता

विं म् प्र स र्वा यिं क्ता

निं लं पि तां न हं ति नं व यं नं २ पं वं ति नं म क्क ट म् प्रो ति ल य नं धं
म व कं म् प्र द कं लिं ग म् प्र तां ति २ धं नं वां प यि प्रं हं पुं वं म् प्र स
॥ ॥ सुं ग म् प्र तं नं मि नं तं वं य नं २ हं नं पि पं त म् प्रो य वं क्ता
तं गुं न ल य नं ॥ ॥ ग ग क्ता ल यि पं व म् ॥ त ल अं न म् प्र थ ॥ उ क्ता
का द य यां क्ता २ सुं ग म् प्र म् प्रो म् प्र हं क्ता २ ग त क्ता टि प्र ता क्ता २ सुं य म् प्र

उ क्ता

उ क्ता

उदितशुवन

नागपद्मं त्रि॥ ताहसाथं॥ उदितशुवनकप्रताप्तनकि
त्रहंरलहिकपदाधनसूक्ष्महा२ निर्मलहृदयकनूत्तम
यत्नाथ२ दहिअहयवत्रपुदाता॥ ॥ तुम्हदेवज्ञज्ञ
ज्ञज्ञत्रक्ष॥ ॥ निजुवनव्यापित० ज्ञज्ञतउद्धात्रिया२
प्रक्षमासिद्वगमलाकेप्रता२ केनकत्रलमक्षिहात्रवि

उदितशुवनकप्रताप्तनकि

ज

हपिता२ केनकसूत्रवृत्तध्रि२ वासकमलधनः
वत्रदन्ताहत्रहंरसहजानंदमूत्रति२ सूत्रनत्र
किंनत्रगणप्रक्रियात्र२ ललाटचत्रक्षत्रिज्ञतध्रिया२
निमित्रघातवत्रभाऊप्रदाना२ दत्रहृनपापदखहृत्त
२त्रकवेत्तसुख० नहसुलावना२ सर्वलक्ष्मसंपूर्ण२ तत्र

उदितशुवनकप्रताप्तनकि

विविक्तचक्रभात्रिलाकं शत्रु २ मन्त्रमन्त्रं तत्तद्विविक्तया ॥ ३३ ॥
द्वित्राशर्वकाला ॥ गानयनकात्र ॥ ॥ धर्मिहिरवनाः उगुपुर्वजः
यस्य स्वपदं जडाचन धर्मिहिरा २ गुन्यालिङ्गाग्रः तन्नाहनक्षः वज्र
धर्मधनननमित्रमाला ॥ ॥ नमामि शिवाग्निका विजया २
विजया नाथ विजयव्यापिणा २ बुधधर्मसंघया विजयप्रतिज्ञाः

यादगन्तव्यस्थितः उमामहेश्वर विजयनाथ विजयव्यापि
गा ॥ ॥ न कृष्णलावनः क्राधज्यहवाः पत्रिप्रितदग्रा
धः विजयसंहारा २ स्वर्जयुक्त कधनः मानसंहाराः विजयवि
जयप्रदत्रिगकिरना ॥ ॥ यनगुयासुधन दानवनागमः
मानवसंहारा विबुधगन सुयनसुतिना ॥ ॥ कायवाक

पुष्पिणी नवत

चिह्न ध्वजधरणाः किलिब दहाः निर्मल गतिना १ एव
एय हनना गिगगवर्गः सुगग्वनश्मः शिपगगधनिषा ॥ १
नागकनंदि ॥ २ कनान ॥ धुगि धानवदनः धुसिवांगमूना १ ह
ज्ज्हाएवन विहविगदहा ॥ ३ ॥ भनाना ३ नमामि १ ३ ॥ स्व
महाकाला ॥ ॥ दहि नकनगिस्व ३ वामागिभुवा १ स्वः पनर्म

पुष्पिणी नवत

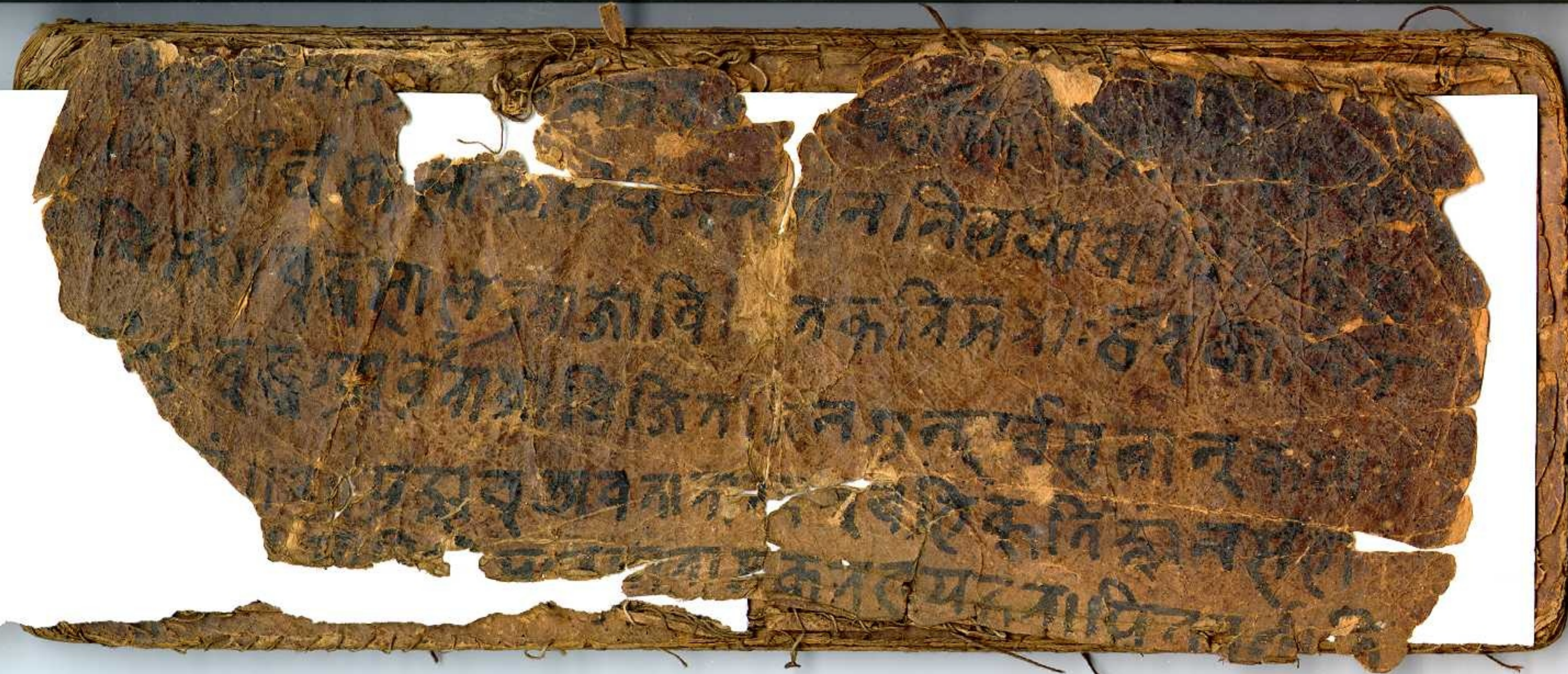
ज्ज्हाएवन विहविगदहा ॥ ३ ॥ भनाना ३ नमामि १ ३ ॥ स्व
महाकाला ॥ ॥ दहि नकनगिस्व ३ वामागिभुवा १ स्वः पनर्म
ज्ज्हाएवन विहविगदहा ॥ ३ ॥ भनाना ३ नमामि १ ३ ॥ स्व
महाकाला ॥ ॥ दहि नकनगिस्व ३ वामागिभुवा १ स्वः पनर्म

ह न पि व न व कं ॥ दान ल वा वृ नृ प द वा नः न मि स दा
ग ध म य क दे व ॥ २ ॥ सूर्य स मा कृ त क र्ण वि ष म लः ना
न द नृ वृ नृ गालि न ना लः प र म न स मृ त वि क ल हा नः ना
मि स दा ग ध ना य क दे व ॥ ३ ॥ पा ष ड् ली कृ म नी न ज न
रुः का म ल पी व न कं उ ल ह रुः नं दि क ना ह न मृ न ज

सू रा वः न मि ॥ ४ ॥ कृ त्रु क नं दि न हं गि स हा यः वि क
द मृ षा कृ त ह न नि का य ॥ मृ ष क ना उ कृ ता स न रा वः न मि
॥ ५ ॥ ना ग म भा ह न कं ध न हा लः लं व नृ नृ द न हा न मृ दा न
ना षा द ॥ ना मृ ग नी न स मा य न के नृ ष ड् प द वा न न र्ब न ल क र्ण
ना न कृ ति ना य न द न स हा वः न मि ॥ ७ ॥ न ल वि ह ष

विनादि न कथं नमि ॥ ८ ॥ बालसुत्रस्य तिर्पति तला
वति नैदं विनायकस्य विनायक ॥ यवपठंति सदा गुरु
विनायकः ननु हवन्तु महादयविद्या ॥ ९ ॥ ॐ तिग्मा मद्रमस्य
कस्तुर्हस्यमाफ ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मद्रमस्य

कनात्मजिनवत्रमस्य नोर्जवत्रवजसुत ॥ मद्रमस्यः वज
वानिसुषवत्रहिमस्यः गुरु लोहदुपातः बुद्धावलावनादि
स्ति हवन्तमिर्नोर्जिन्तु निस्पद्यदः सुखा ॥ १ ॥ हवन्त
कात्रवर्जः पश्यपनिदमस्य वर्ज्यं भवन्तु ॥ पिबन्तु
हवन्तु गीष्मन्तु यन्तु ॥ केराजो महासुमा ॥ ॥ ॥



...न निरुद्धा वा ...
...न कृति स ...
...न नाना र्व ...
...न कृति ...
...न कृति ...

[illegible]

॥ २ ॥ कादिरा प्रोता व अ ला वें २ ॥ ज नाम न त य वी ध न भा व य ॥
 य भा र ज ग न स हा व ॥ ५ ॥ नो ग ह न वि ॥ ताल इ र्ज मान ॥ कल म
 च न वि धि पं चा प हा ना ॥ पू ज या मि त द व ग ह ॥ २ ॥ वि वि धि उ प हा
 न नृ त य गी त व न ॥ उ म रू धी धु धि नि सूर मी ग ला ॥ ५ ॥ उ व ज्ञा मृ न
 द क म द कि नि स म हा व नु हा व क अ द य नृ प २ ग ह म स ग हि
 श्री ल ख मि स हा को ल ॥ उ स प्र ति षि त व र्ज स्वा हा २ क न क नृ य

जगज्ज्योतिर्वज्रवदकप्रथमसंख्ये २ अथ पत्र उर्ध्वं पुनः हृत्
 धनं वज्रवद्विषयं द्वीगकमज्जल २ त्रिंशत् लम्बं वज्रवाद्यं
 नयति तदनुकम्पितं २ उँ ह हा ह्रीं हकार हन्ति तव हं तुम्ह
 त्रमृताकारा वयंति २ तव कर्त्तुमस्य कृता मृज्ज्वार
 लिपिमाद्यवज्रं इतथा धाविता ॥ ध्रु ॥ नागनाटक ॥ ना
 ल इज्जमान ॥ **त्रकवदन** त्रियशायनसुंदरि २ अष्टादश

पुनरुत्पन्नं किं तल ॥ ध्रु ॥ तुम्हदविवाहलिमा मकि
 दकी ॥ ध्रु ॥ जगत्प्रभादिने मयनसुत्रं ॥ ध्रु ॥ आगम
 वंद्यता सवधानं २ जगत्प्रभादिजागरुत्पदक ॥
 ॥ ध्रु ॥ पर्ववृद्धसूचकसुन्दरं सह पुत्राणि नित्रेयाह
 र्वं तुम्हव ॥ ध्रु ॥ सतगुरुवत्प्रभादिगत्प्रतिमा
 तनयिवाकवज्रसूत्रार्थ ॥ ध्रु ॥ ॥ ॥

उमकु २५

नौ गगन धातु हत वि॥ नाल रूप ॥ **उमकु दह** नप र शान
न रूप २ पंदा मिया न सप य ता नि पूजिया ॥ **रुद्र** दु व वलि
त्राय त्रि नु व न वीता ॥ ना वी त म ला पे क स म या न द ॥ ॥
वित्र वित्र ज्ञात सु ह जा न द २ क न क म ला वर्त ह द या न
द ॥ ॥ पं य वृ द्ध पं व द्वा न स रूप २ द वा सू त न त पु ना दि त
हि द या ॥ ॥ ॐ आ हूं श्री विं **उम** ध न या न २ उ म त् द्य न ध

रा. व. म. ५१

नि. वित्र सा म द ॥ ॥ त्रा ग ना त क ना ल द्वा मा न ॥ **रा न**
मं उ ल सा र्द ह लि त ह का ता २ आ लि का लि द्वा यि चा प यि ह
२ व ॥ ॥ न सा मि २ जा नि ता तं ह त्रि ह व न ना थ ॥ ॥ व ज
वा त्रा हि आ लिं ग ग न द य ॥ ॥ **क्र** ॥ कृ **क्र** वर्त य त् स र्व ति
न य ना २ वि ज्ञ कृ लि ग न द रं द्वा द ह त ॥ ॥ **ग** कि नि

५५
५५
गामाखंडाहा नृपिनी र वतुन द।वी की उंति विलासा ॥ ॥ हृषि
तषट्सुडा कृती जवा प्र ज्वर ह नयि ज नृपमवज ह नृव दासा
त्रां गसूप निष्ठा ना गक ॥ नृक ताह ॥ **तिदल** स ग नृह दिन के न
मं उल ना जित त्रि ह व न उ न नि र ग ग क न उ त्रि नि न य नार
सा न च त्रु ग न क द नी ॥ ॥ द वि क र ति क पाल ध ना ॥ ॥ ह
षि त न न मि र मा ला क म ल कृ लि ग द यि ता न वा रु यि ना र यि

सहज हृषिनी ॥ ॥ व कि जि प्र क र्ण कं उ ल कं ल कं ठ क
ग ल र हा थ र व क क श्रि या उ म् ब ल व त न नृ प र ह ष डि ॥ ॥
ह व प ल या न ल नं रु ध र नं दा हि नि स्ना न क रा या र हा वा हा व
वि व र्जित नृ नृ नृ ग ग नृ हं र पि क्षी ॥ ॥ प द स व रु प द जि न
ग न ध रि या स व यि हा स कृ लि ग र अ न नृ र सि डि मा रु दा य
नि ॥ ॥ पु न मा मि ग्रा व रु अ जि नि ॥ ॥ - - - - -

प्रयत्नः

राजकदुःखं लक्षणं ॥ ॥ इयं वाचुलिदं विवेचनं रसय
 त्रसूत्रासूत्रं वीदितयनं ॥ ॥ तं हं गवतिपादकमनम
 हिमंति न नउत्तपुनपुनकाता १ हाउमहउआ हननवि
 हषित नउत्तचं ठउता तारतिनितिनिनितिनय नुनय ना
 ना ॥ ॥ जितप्रिष्टिदुतध्रिक्कलनयनं कस्तुत्रि
 कर्षूत्र हनयितं बाला ॥ ॥ कनतिकपालध्रिम् उमात्रह

प्रयत्नः

पिता स्कंधवद्वा राजकपालध्रिक् ॥ ॥ हनयिषूत्रतवज
 वाचुलिदासं ग्रावजगतिनि वनदप्रसादं ॥ ॥ राजज
 त्रिगालमार्थं ॥ असलजिदससत्रावहवित्तजितारतिहव
 नसवतावतनकरूपा ॥ ॥ जिकिनितामा स्वउताहा
 रुपिनी २ ग्रादवितिजकता गिहवमाता ॥ ॥ नाहिम
 कं लमापु वनज्यतीरतिनि हदिनिनितिनयना ॥ ॥

त्रिनिवृत्तयुक्तं त्रिव्यापिता २ अथ यानि त्रंज नञ्जातिरू
 पा ॥ ॥ शुद्धिस्तुतिवत्तद्विस्मयानां २ जीवज्जातिनि
 पादजातम् ॥ ॥ नागपञ्चजति ॥ तालमाथ ॥ ॥ मत्तलसम
 यत्कर्मफलसंपूर्ण २ दादज्जुत्तयुत्तयान्वयन ॥ ॥ जान
 तुकरुहः शास्त्रवत्तज्जातिनि २ ॥ शास्त्रावकुलादीवत्तवत्तान्वय
 जाकिनीलामाः सत्तनाहत्तपित्तीश्वातिमान्वत्तवापियाथा ॥

कायवाकविकृतिनिवृत्तं २ दानपतियाष्टुहृत्तुवतात्त
॥ ॥ आगयोगिनीमन्त्री. सुमन्तुताव २ अष्टममन्त्री
हृत्तुव ॥ ॥ ११ नागहृत्तुवितान्तरय ॥ पर्वतथागतमन्त्रि
यात्र २ समयावायविष्णुदल २ दणदिगदणवन्. शत्रुद
हृत्तु ॥ दानपतिविष्णुनिवन्तर ॥ ॥ १२ दैर्दुर्दुर्वी

नैव न वलिदानदत्त दानपति ॥ तत्रवता न ॥ ॥ पूर्वव
 नाचन दत्ति ॥ नत्तसैतव पश्चिम अमिता तत्तिनयापिया
 नैरुत्तुन अभाय सिद्धि मा ॥ अत्ताय चात्रिमानचउचक्र
 थापिया ॥ ॥ समाधि ॥ सैवन मा ॥ कालचक्र हवत्त
 वि ॥ दत्त ॥ नैरुत्तुन नाता वाधिसत्त आशी वीदमत्रिया चात्रि

मानचउयापिया ॥ ॥ सिंह नादवा क्रिया ॥ उभा
 रवा ॥ अत्ता गिति मत्रि सि क्रिया ॥ उमत्तवा ॥
 या अत्ता गिति मत्रिया ॥ जाले धनि प्रगा कर्त्त पाग
 वयिया चात्रिमानचउचक्र थापिया ॥ १२ ॥ नाग
 न विताल इर्त्तमान ॥ नत्त ॥ आ का रत्त रत्त रत्त रत्त
 च विसत्त उत्त रत्त रत्त ॥ ॥ नैना ॥ रत्त नत्त नत्त ॥ ॥

॥
 ॥

धवलसुसंखवदहध्वरसुसुहादियकात्रहानुहान ॥ ॥
 ईदआलिगलकागध्वरवकुद्यभमृदालयमृत्ति ॥ ॥
 मायाविद्वद्विनिनजगत्सुहादियवकुसुतपनभध्वर ॥ १३ ॥
 नागहर्नवतालइजमान ॥ नमामि रजिनकाकुकरैतक
 वतुनमृत्तिआलंकृता रपयदानपयध्वरुपावृद्ध
 मंआलयध्वना ॥ ॥ नमो भगवते सा लउदात्रियाम

नमो भगवते नमो भगवते रपयध्वरुपावृद्ध ॥ ॥ नमामि रजिनकाकुकरैतक
 पूनध्वनमृदिसिद्धिवरदायनि रइतिनह्वनसर्वपापकुर्य
 कनदानपूष्यनृदंभाकुप्रदा ॥ ॥ नाग तालमाध
 नमामि रधर्मध्वरुवागीध्वन धातुकाद्वपत्रिमंतिता र
 धातुकातात्रयजनपूनकाता सर्वदेवपत्रिमंतिता ॥ ॥
 नमामि रवागीध्वनमंथल पद्मगितिनिवासिता रसुखवि

प्रवर्ग

विष्णुहित इगतिनाशन प्रहमा मिडिनचक्रं ध्याता ॥ ॥ नैनाद्वै
नैना ॥ ॥ १४ ॥ नागधूमता ॥ तादूर्जमान ॥ **त्रिचक्र** विष्णुम
उलमा अस्मि तिस्रानदमृतिधनार वज्र वा नाहि आलिङ्ग
नसर्वत्र नानात्रुमि महाकुलार ॥ ॥ नैनाद्वै नैना नैना
द्वै ॥ ॥ नीलवला चतुर्वक्त्र प्रतिमुखत्रिभुज पत्रमानंद
मृतिधनार विष्णुवज्र अर्द्ध चंद्रकण्ठामकूटधनहातश

हस्तसहस्रतिता ॥ ॥ वज्रचंद्र गजचर्ममृत्खदीग
धनवीरमानंदमृतिधनार कनतिकपाल पत्रध
पाधधन त्रिभुलवृक्ष निर्वधना ॥ ॥ दिगविदिग्
काकाध्यादिभुमदादियात्र सहजानंदमृतिधनार
नमामि रश्मिचक्रसर्वत्र सततचक्रलयात्राधिता ॥ १५ ॥

हानज किनि आर्लि गिता २ इति न हन ह अति धवल तु द हा हा
 न ज कि नि पत्र म ध्वनि ॥ ॥ न ना ई ई ई २ न ना न न ई ई ई
 ॥ ॥ द दिन क न स न वा स व न र ध्वनि क य द ग प्र द क पा ल
 ध्वनो २ व इ द्य ० न नि ला च न तु द नि प्र ह ति न क्री ध ष्टि म
 त्र वी या ॥ ॥ वि वि ध मा न व ल वि द्य वि ना भ न मृ दि सि दि व
 प्र दा य नि २ ह न तु ह वी तु नि व ध न ना उ न भा य य उ ग न ना

न यं तु ॥ ॥ प्र ह व व इ प न मा ग न ह ग ति ला वी तु ह वी तु त्रि प्र
 ध्व प्र द २ उ न म २ क न पा न क यं क न आ दि वृ द्ध प न म ध्व न ॥
 ॥ १ ॥ ना ग ना म क ति ॥ तु ल मा थ ॥ क म ले वि का णि त स्थि
 ति इ हा स न कू म द प्रि य व द सु म द हा २ व तु न व द न क व ल य द ल
 स न न प्र प्र का णि ता ॥ ॥ न मा मि श्री श्री म हा मी रु श्री स क ल
 ग र हा ना या स न ग न ॥ ॥ क म ति द ह न हा न प्र का णि त

क म ति द ह न

दि ८

सर्वहृत्माननिधिवप्रगता ॥ ॥ प्रथमकनकद्वयकानितवैकुण्ठं ०म्
दामालिगहनाडितारद्वितीयैकधनरुतीयसुनरुधचतुर्थव
प्रसवद्वयधना ॥ ॥ उहयहृत्पाणदुवनधर्मकापवतुर्थवामध
न. ए. सु. को. र. न. न. म. कू. द. नि. प्र. कू. लित. कि. लि. प. ना. न. न. वि. व. ना. ॥ ॥
निर्विद्विहृ. ०. नि. मि. रु. ह. नि. ता. त्व. व. हृ. हृ. न. नि. धि. व. न. प्र. दा. र. न. द. च. न. ह. न.
न. न. मा. ग. त. प. न. मा. द. य. ज. ज. न. नि. ॥ १८ ॥ न. य. ता. म. क. नि. ॥ ता. ल. मा. था. ॥

ॐ हृन्नीदध्वसूतानननाजीवलावनरगतितात्रहर्कजासन ॥ ॥ न. मा. नि. धी. न.
द. व. ला. कि. त. ध. व. न. ज. ग. त. पा. लि. त. त्रि. ह. व. ध. ना. ॥ ॥ ग. र्मा. ग. य. का. सा. न. वा.
न. पा. लि. त. ल. व. म. द. द. हि. न. न. य. ए. म. ह. ना. ॥ ॥ म. कू. द. वि. धा. ति. त. अ. नि.
त. त. अ. ग. त. अ. म. ना. स. र. न. न. न. न. न. ग. ता. ॥ च. तु. न. आ. न. न. च. तु. न. र्प. व. ध. म.
ख. नि. न. य. न. वी. दि. त. प. द. र्प. क. र्ज. ॥ ॥ स. त. र. र. च. न. ह. म. ल. क. ध. न. र्ज. ह. न. ध.
यि. स. ध. ह. र्प. ह. व. ह. न. र्ज. ॥ १९ ॥ ना. ग. क. ह. ॥ ता. ल. व. द. र्क. का. ल. ॥ ॥

पवनक लननी लधन हिमं ल २ त इ पनिक न का र ल म ध व कि ॥ ५५ ॥
 भी मि श्री व कु र्से व ल त व प द क म ली श्री व ज वा ना हि आ लि ग म ॥ ५६ ॥
 आ ली का ली आ ली उ व न ५ ॥ २ व रु म नि म र्दन ए व ह य ह न ॥ ५७ ॥
 व द व द ना द ह न न य नां २ च न न स दू नि त र्से व न व न ॥ ५८ ॥ वि श्व
 हि दू र्त्त सा र्ध नि ल ५ २ मी ति त म व ल कू ठ ल क न ॥ ५९ ॥ अ न क पं धी प

उ द पं र म म ग त को टि र्घं म म य द य क न ति ॥ ६० ॥ वा दि त उ म र्
 ध नि त र व दं ग र ती कू क म न पा म ति षु ल ॥ ६१ ॥ सु र वि न म द न क्री
 स व तं द र पी मू ष पू नि त क नी ट क र म हि ता ॥ ६२ ॥ क न ति सु नी ज
 स न वि र ध नि ता २ स अ ह न न वि न मा न र्त्त ॥ ६३ ॥ स त म र्द व न
 र्त्त म र्क क ध न र्त्त २ ह न यि स र्ध र्त्त वि न गी त ॥ ६४ ॥ २२ ॥ ॥

नागहर्त्रवि ॥ तालजति ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 जापूजितपूजसितावेतलसुखरूपतदीश्वर ॥ ५५ ॥ खखखादिषोडश
 लिपूजाग्रंघद्यंघाटयघाटयविष्णुनमोर्षीचामिमानसपंचसाजिना
 पंचज्ञानसर्ववलिना ॥ ५६ ॥ सर्वयक्तनाकुसुमतप्रतपिष्णुचलीज
 पत्न्या नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ५२ ॥ सम यात्र कुतुहानपतिः सर्वसुखसंपदम्पतिः २५
 धेवजर्थेव पुंजर्थेपिवधर्तः जिद्युधनातृकाहवर्तुन ॥ ५३ ॥ दान
 पतिः सर्वकार्यसिद्धिः स नीनथ सर्वसुखसंपदम्पतिः २५
 स सा नतथगतवयनः साहाय्यकरहवर्तुन ॥ ५४ ॥ २५ नागवि
 हासनालमाथा ॥ उदितालललयपवनधृता २ वनसी दामसी का

सतीता ॥ ५५ ॥ ध्यानइक नह यनि न्न ननिता २ अत्ययनि नैऊत भाऊ
गता ॥ ५६ ॥ दिनघनमं ठल नथ्यगता २ सुहजा मृतनस संवक्रता
॥ ५७ ॥ दग्ध मृति तयप्रतिनिहीता २ दवाहनन न ५८ ॥ नृमिता
॥ ५९ ॥ गर्भवीति पवतप निग्रनू लुगता २ वक्रवागाहि गुहपा
मम नृमिता ॥ ६० ॥ १० ॥ नागविलासता लमाथ ॥ इह

[illegible]